

# दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ उनहत्तर

भविष्यवाणी के सूत्र सुलझाना: दानियेल में "दुर्ग" के प्रतीकवाद को समझना

Jeff Pippenger

2024-03-31

दानियेल के अध्याय ग्यारह का पद दस "गढ़" शब्द के द्वारा आंतरिक और बाह्य संदेश को एक साथ जोड़ देता है। यशायाह की पैंसठ-वर्षीय भविष्यवाणी के साथ जो संबंध यह स्थापित करता है, वह बाह्य भविष्यवाणी के "गढ़" को रूस के रूप में, और उसी इतिहास के दौरान मसीह द्वारा उठाए गए मन्दिर के आंतरिक "गढ़" के रूप में पहचानता है। बाह्य गढ़, जो पद इकतीस में है, "बल का पवित्रस्थान" के रूप में पहचाना गया है, और वह किसी सांसारिक राजा या राज्य का प्रतिनिधित्व करता है। आंतरिक गढ़, अथवा बल का आंतरिक पवित्रस्थान, वह मन्दिर है जिसे वाचा का दूत छियालीस वर्षों में खड़ा करता है।

उस मंदिर (दुर्ग) के परमपवित्र स्थान में, परमेश्वर स्वर्गीय स्थानों में विराजमान हैं।

दानियेल की पुस्तक में दो इब्रानी शब्द हैं जिनका अनुवाद "पवित्रस्थान" किया गया है। एक है "मिखदाश," और दूसरा है "कोदेश।" "मिखदाश" किसी मूर्तिपूजक पवित्रस्थान, या परमेश्वर के पवित्रस्थान, अथवा यहाँ तक कि किसी गढ़ का भी बोध करा सकता है। "कोदेश" का प्रयोग बाइबल में केवल परमेश्वर के पवित्रस्थान के लिए ही किया गया है। दानियेल अध्याय ग्यारह के इकतीसवें पद में "सामर्थ्य (गढ़) का पवित्रस्थान" (मिखदाश) का अनुवाद "सामर्थ्य के पवित्रस्थान" के रूप में किया गया है, और वहाँ "पवित्रस्थान" के लिए प्रयुक्त इब्रानी शब्द "मिखदाश" है, जो रोम नगर का प्रतिनिधित्व करता है, जो मूर्तिपूजक तथा पोपीय, दोनों प्रकार के रोम के इतिहास में रोमी सामर्थ्य का प्रतीक है। दानियेल ने इन दोनों इब्रानी शब्दों का अत्यन्त सावधानीपूर्वक प्रयोग किया। उन पदों में, जो ऐडवेंटवाद का केंद्रीय स्तम्भ हैं, हमें "पवित्रस्थान" शब्द मिलता है।

तब मैं ने एक पवित्र जन को बोलते हुए सुना, और दूसरे पवित्र जन ने उस पवित्र जन से, जो बोल रहा था, कहा, "दैनिक बलिदान, और उजाड़ने वाले अपराध के विषय में यह दर्शन, जिससे पवित्रस्थान और सेना दोनों पैरों तले रौंदे जाएँ, कब तक रहेगा?" और उसने मुझ से कहा, "दो हजार तीन सौ दिनों तक; तब पवित्रस्थान शुद्ध किया जाएगा।" दानियेल 8:13, 14

दोनों पदों में 'the sanctuary' के रूप में अनूदित हिब्रानी शब्द 'qodesh' है, और यह केवल परमेश्वर के पवित्रस्थान के लिए ही प्रयुक्त होता है। ग्यारहवें पद में, जहाँ मूर्तिपूजक रोम, और विशेष रूप से रोम नगर के पैथियन मंदिर, की पहचान की गई है, हमें 'sanctuary' शब्द मिलता है, पर उस पद में यह हिब्रानी शब्द 'miqdash' है।

हाँ, उसने अपने आप को सेनाओं के प्रधान तक महान बना लिया, और उसके द्वारा नित्यबलि छीन ली गई, और उसके पवित्रस्थान का स्थान गिरा दिया गया। दानियेल 8:11.

दानियेल के ग्यारहवें अध्याय की इकतीसवीं आयत में "शक्ति का पवित्रस्थान" इब्रानी शब्द "miqdash" है, और यह अध्याय ग्यारह की सातवीं और दसवीं आयत में "दुर्ग" के रूप में अनूदित इब्रानी शब्द के संदर्भ में भी आता है। सातवीं आयत में दक्षिण का राजा सीधे रोम नगर में चला गया और उत्तर के राजा को बंदी बना लिया, क्योंकि वह उसके दुर्ग में प्रवेश कर गया; पर दसवीं आयत में उत्तर का राजा केवल "दुर्ग" "तक" ही जाता है, क्योंकि वह अपने राज्य और मिस्र की सीमारेखा पर रुक गया। अगली आयत रफ़िया की इसी सीमारेखा को संबोधित करती है। इकतीसवीं आयत का "शक्ति का पवित्रस्थान" "दुर्ग" का ही "miqdash" है।

राफिया में सीमारेखा की लड़ाई यूक्रेन में सीमारेखा की लड़ाई का प्रतिरूप है। उस भविष्यसूचक इतिहास को यह समझकर पहचाना जाता है कि "मस्तक" राज्य या राजा है; वह उसकी शक्ति का गढ़ है; परंतु यह भविष्यवाणी एक

आंतरिक और एक बाहरी सत्य को संबोधित कर रही है। बाहरी रेखा के लिए "शक्ति का पवित्रस्थान" "मिक्दाश" पवित्रस्थान द्वारा निरूपित होता है, और आंतरिक रेखा के लिए शक्ति का पवित्रस्थान "कोदेश" पवित्रस्थान द्वारा निरूपित होता है।

1844 से 1863 तक का काल भविष्यसूचक इतिहास की ऐसी रेखा का प्रतिनिधित्व करता है जो एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी को दर्शाती है। उत्तरी राज्य के विरुद्ध बिखराव के पच्चीस सौ बीस वर्षों का अंत 1798 में हुआ, और दक्षिणी राज्य के विरुद्ध पच्चीस सौ बीस वर्षों की वही रेखा 1844 में समाप्त हुई। ये दो रेखाएँ मानवजाति के निम्न स्वभाव और उच्च स्वभाव का प्रतिनिधित्व करती हैं। निम्न स्वभाव, जिसका प्रतिनिधित्व उत्तरी राज्य करता है, शरीर है, और उच्च स्वभाव सिर है। सिर राज्य की राजधानी है, और वही राजा है। इस उदाहरण के लिए मसीह ने अपने नाम को स्थापित करने हेतु दक्षिणी राज्य, यहूदा, को चुना, और राजधानी नगर यरूशलेम है। यरूशलेम वही स्थान है जहाँ सामर्थ्य का सच्चा पवित्रस्थान स्थित है, और उस पवित्रस्थान में राजा के लिए, जो सिर है, एक सिंहासन कक्ष है।

लैव्यव्यवस्था छब्बीस के "सात काल" 1856 में अंतिम मुहरबन्द करने वाला सत्य थे, जिनका उद्देश्य कार्य को समाप्त करने के लिए एक ध्वजा को सामर्थ्य प्रदान करना था। 1844 से 1863 तक, मसीह का अभिप्राय था कि वह अपनी दिव्यता को अनन्तकाल के लिए मानवता के साथ संयुक्त करे, परन्तु मानवता ने विद्रोह किया।

उस समय वह मनुष्य की निम्न प्रकृति को परिवर्तित करने में समर्थ नहीं था, क्योंकि वह कार्य उसके दूसरे आगमन पर होता है। तब वह मनुष्य की उच्च प्रकृति को अपने स्वरूप में परिवर्तित करेगा, मनुष्यजाति के सिर को, दिव्यता के सिर के साथ संयुक्त करके। सिर राज्य की राजधानी था। सिर ही राजा था, और जब मसीह दिव्यता के मानवता के साथ एकीकरण का यह रूपांतरण संपन्न करता है, तब वह यरूशलेम के पवित्रस्थान में, परमपवित्र स्थान में, जहाँ मसीह अपने पिता के साथ विराजमान है, मानवता और दिव्यता—दोनों के सिर को संयुक्त करता है।

जो विजयी होगा, उसे मैं अपने सिंहासन पर मेरे साथ बैठने का अधिकार दूँगा, जैसा कि मैं भी विजयी हुआ और अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठा हूँ। जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। प्रकाशितवाक्य 3:21, 22.

मसीह यह प्रतिज्ञा करते हैं कि वे (Laodiceans), जो वैसे ही विजय पाते हैं जैसे उन्होंने विजय पाई (और Philadelphians बन जाते हैं), स्वर्गीय स्थानों में उनके साथ बैठाए जाएंगे।

जो उसने मसीह में की, जब उसने उसे मरे हुएों में से जिलाया, और स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर बिठाया, ... और उसने हमें भी उसके साथ उठाया, और मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया। इफिसियों 1:20, 2:6.

यहेजकेल की दो लकड़ियों का जोड़ा जाना (मानवता का दिव्यता के साथ) परमेश्वर के सामर्थ्य के पवित्रस्थान (qodesh) में संपन्न होता है, ठीक उसी समय जब सामर्थ्य के गढ़ (miqdash) की पहचान उस भविष्यवाणीगत कुंजी के रूप में की जाती है जो उस भविष्यवाणी की आंतरिक और बाह्य दोनों रेखाओं को जोड़ती है, जिसे गब्रिएल दानिय्येल को समझाने आया था कि एक लाख चवालीस हजार के मुद्रांकन के समय परमेश्वर के लोगों पर क्या बीतने वाली थी। मसीह ने इस कार्य को मिलरवादी इतिहास में पूरा करना चाहा, परन्तु 1863 के विद्रोह के कारण यह कार्य विफल कर दिया गया; तथापि 1844 से 1863 तक का इतिहास अब भी एक ऐसी रेखा के रूप में बना हुआ है जो उस प्रयत्न किए गए कार्य का दृष्टांत प्रस्तुत करती है।

दानिय्येल अध्याय ग्यारह की दसवीं आयत में ग्यारह से पंद्रह तक की आयतों के आंतरिक और बाहरी संदेश को समझने की कुंजी निहित है, जो 2014 में हमारी भविष्यवाणी-संबंधी इतिहास में आया। दसवीं आयत 1989 की पहचान करती है, जो एक लाख चवालीस हजार के सुधार आंदोलन में अंत का समय है, परन्तु इसमें वह कुंजी भी है जो 2014 को मुहरबंदी के इतिहास में एक मार्गचिह्न के रूप में पहचाने जाने की अनुमति देती है।

22 अक्टूबर, 1844 को वाचा का दूत अचानक उस मन्दिर में आया जिसे उसने खड़ा किया था। वह मार्गचिह्न 11 सितम्बर, 2001 का प्रतीक है, जब तीसरा स्वर्गदूत फिर से आया, और सातवीं तुरही ने फिर से बजना आरम्भ किया। तब 1840 से 1844 तक का इतिहास भी पुनः दोहराया जाना था, क्योंकि जो स्वर्गदूत 11 अगस्त, 1840 को उतरा था, वह स्वयं यीशु मसीह से कम कोई व्यक्तित्व न था, और उसका कार्य अपनी महिमा से पृथ्वी को प्रकाशमान करना था।

1840 से 1844 तक की अवधि भी 11 सितंबर, 2001 से लेकर शीघ्र आने वाले रविवार-विधि तक की अवधि का प्रतिनिधित्व करती है; उसी प्रकार 1844 से 1863 तक की अवधि भी 11 सितंबर, 2001 से लेकर शीघ्र आने वाले रविवार-विधि तक की अवधि का प्रतिनिधित्व करती है। सिस्टर व्हाइट 1844 के इतिहास को क्रूस के इतिहास के साथ समरेखित करती हैं, और क्रूस साढ़े तीन-साढ़े तीन वर्षों के दो इतिहासों के विभाजन का प्रतिनिधित्व करता है, जो दोनों एक-दूसरे के साथ समरेखित हैं। क्रूस यह स्थापित करता है कि पूर्ववर्ती इतिहास, जो 1840 में आरम्भ होकर 1844 में समाप्त होता है, और उसके पश्चात का इतिहास, जो 1863 तक चलता है, दो समानान्तर इतिहास हैं, और दोनों ही मुद्रांकन की अवधि का प्रतिनिधित्व करते हैं।

1840 से 1844 तक की पहली रेखा फिलाडेल्फियाई एडवेंटिस्टों की विजय का प्रतिनिधित्व करती है, 1844 से 1863 तक की दूसरी रेखा लाओदीकियाई एडवेंटिस्टों की विफलता का प्रतिनिधित्व करती है। दोनों वर्ग दानिय्येल के दसवें अध्याय में दर्शाए गए हैं, क्योंकि दानिय्येल, जो एक लाख चवालीस हजार पर मुहर लगाए जाने के समय की विजयी बुद्धिमान कुँवारियों का प्रतिनिधित्व करता है, ने दर्शन देखा, परन्तु जो उसके साथ थे वे दर्शन देखकर भाग खड़े हुए।

पहले महीने के चौबीसवें दिन, जब मैं उस बड़ी नदी के किनारे था, जो हिदेकेल है; तब मैंने अपनी आँखें उठाईं और देखा, और देखो, मलमल के वस्त्र पहिने हुए एक पुरुष था, जिसकी कमर ऊफाज के उत्तम सोने की करधनी से बँधी हुई थी। उसका शरीर बरके पत्थर के समान था, और उसका मुख बिजली के समान दीप्तिमान था, और उसकी आँखें आग की मशालों के समान थीं, और उसकी भुजाएँ और उसके पाँव चमकते हुए पीतल के समान थे, और उसके वचनों का शब्द बहुत-से लोगों के शब्द के समान था। और मैं, दानिय्येल, ही ने वह दर्शन देखा; क्योंकि जो पुरुष मेरे साथ थे, उन्होंने वह दर्शन न देखा; परन्तु उन पर बड़ी दहशत छा गई, इसलिए वे भागकर छिप गए। दानिय्येल 10:4-7.

दानिय्येल के अध्याय सात में, दानिय्येल ने हिंस्र पशुओं का दर्शन देखने के बाद, उस दर्शन को समझाने के लिए गब्रिएल आया।

मैं दानिय्येल अपने शरीर के भीतर अपनी आत्मा में व्याकुल हो उठा, और मेरे सिर के दर्शनों ने मुझे घबरा दिया। मैं वहाँ खड़े लोगों में से एक के पास गया और उससे इन सब बातों का सच्चा अर्थ पूछा। तब उसने मुझे बताया और इन बातों की व्याख्या मुझे समझा दी। दानिय्येल 7:15, 16.

दानियेल के आठवें अध्याय में, दानियेल द्वारा पवित्रस्थान के पशुओं का दर्शन देख लेने के बाद, दर्शन का अर्थ समझाने के लिए गब्रियल आया।

और ऐसा हुआ कि जब मैं, अर्थात् मैं दानिय्येल, दर्शन देख चुका था और उसके अर्थ की खोज कर रहा था, तब देखो, मेरे सामने मनुष्य के समान रूप का एक व्यक्ति खड़ा था। और मैंने ऊलाई के तटों के बीच से एक मनुष्य की आवाज़ सुनी, जो पुकारकर कह रही थी, "गब्रिएल, इस मनुष्य को यह दर्शन समझा दे।" दानिय्येल 8:15, 16.

दानिय्येल अध्याय नौ में, जब दानिय्येल को यिर्मयाह द्वारा निर्दिष्ट वर्षों की संख्या और मूसा की रचनाओं में शाप तथा परमेश्वर की शपथ, दोनों के रूप में वर्णित बात की समझ हो गई, तब दर्शन की व्याख्या करने के लिए गब्रिएल आया।

और जब मैं बोल रहा था, और प्रार्थना कर रहा था, और अपने पाप और अपनी प्रजा इस्राएल के पाप को स्वीकार कर रहा था, और प्रभु मेरे परमेश्वर के सामने अपने परमेश्वर के पवित्र पर्वत के लिए अपनी विनती प्रस्तुत कर रहा था; हाँ, जब मैं प्रार्थना ही कर रहा था, तब वह पुरुष गब्रिएल, जिसे मैंने आरम्भ में दर्शन में देखा था, जल्दी-जल्दी उड़ते हुए, संध्या की भेंट के समय मेरे पास आकर मुझे छू गया। और उसने मुझे समझाया और मुझसे बातें कीं, और कहा, हे दानियेल, अब मैं तुझे बुद्धि और समझ देने के लिए आया हूँ। दानियेल 9:20-22.

अतः तीन गवाहों के आधार पर, जो सभी दानियेल की पुस्तक से हैं, अध्याय दस में जब गब्रिएल दानियेल से कहता है कि वह दानियेल को यह समझाने आया है कि अंतिम दिनों में परमेश्वर के लोगों पर क्या घटेगा, तब गब्रिएल उस स्त्रीलिंग "marah", कारक दर्शन की व्याख्या कर रहा है, जिसे दानियेल ने देखा था और जिससे अन्य वर्ग भाग गया था.

अब मैं तुझे यह समझाने आया हूँ कि अन्त के दिनों में तेरी प्रजा पर क्या बीतेगा; क्योंकि यह दर्शन अभी भी बहुत दिनों के लिए है। दानियेल 10:14.

दानियेल ने जो दर्शन देखा था, जिसने विश्वासियों में विभाजन उत्पन्न किया, वह मसीह के प्रकट होने का दर्शन था—तेईस सौ वर्षों का दर्शन—परन्तु वह उसी दर्शन की स्त्रीलिंग अभिव्यक्ति थी। मसीह के अचानक प्रकट होने—वाचा के दूत के रूप में—के दर्शन की समझ ही थी, जिसने दानियेल (और जो दानियेल द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए थे) को मसीह के स्वरूप में परिवर्तित कर दिया। जो कुछ 'आखिरी दिनों में परमेश्वर के लोगों पर घटेगा' उसका प्रतिनिधित्व 1840 से 1844 तक के मिलरवादियों के इतिहास द्वारा, और 1844 से 1863 तक के मिलरवादियों द्वारा भी किया गया है। एक वर्ग विद्रोह में उस दर्शन से भाग जाता है, और दूसरा वर्ग विश्वास से मसीह का अनुसरण करते हुए परमपवित्र स्थान में प्रवेश करता है, ताकि स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया जाए।

फिर भी, जब गैब्रियल उस दर्शन की व्याख्या करता है जिसमें परमेश्वर के अन्तिम दिनों के लोग मसीह के स्वरूप में बदल दिए जाते हैं, तो वह संसार के बाह्य इतिहास को प्रस्तुत करता है। मसीह के विषय में दानियेल के दर्शन को गैब्रियल ने एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी के समय के बाह्य इतिहास के रूप में व्याख्यायित किया। जब गैब्रियल की व्याख्या 11 सितंबर, 2001 के इतिहास तक पहुँचती है, तब पद सोलह के 'रविवार के क्रानून' से पहले के रूप में जिस इतिहास पर बल दिया गया है, उसे केवल उस समझ की कुंजी से पहचाना जाता है जिसे पद दस में 'दुर्ग' के रूप में दर्शाया गया है। 11 सितंबर, 2001 को प्रत्येक दर्शन का प्रभाव पहियों के भीतर पहियों के समान उद्घाटित होने लगा।

और यहोवा का वचन मेरे पास आया: 'मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के देश में जो यह कहावत तुम्हारे बीच प्रचलित है वह क्या है, कि, "दिन लम्बे होते जाते हैं, और हर एक दर्शन निष्फल होता है"?' इसलिए उनसे कहना, 'प्रभु यहोवा यों कहता है: मैं इस कहावत का अंत कर दूँगा, और वे इसे इस्राएल में फिर कभी कहावत के रूप में प्रयोग नहीं करेंगे; पर उनसे कहना, "दिन निकट आ गए हैं, और हर एक दर्शन की सिद्धि।" क्योंकि इस्राएल के घराने में अब न कोई व्यर्थ दर्शन होगा और न चापलूसी से की जाने वाली भविष्यवाणी। क्योंकि मैं यहोवा हूँ: मैं बोलूँगा, और जो वचन मैं बोलूँगा वह पूरा होगा; वह अब और टाला नहीं जाएगा; क्योंकि हे विद्रोही घराने, तुम्हारे ही दिनों में मैं वचन कहूँगा और उसे पूरा करूँगा,' यह प्रभु यहोवा की वाणी है। फिर यहोवा का वचन मेरे पास आया, कि, 'मनुष्य के सन्तान, देख, इस्राएल के घराने के लोग कहते हैं, "जो दर्शन वह देखता है वह बहुत दिनों के लिए है, और वह दूर के समयों के विषय में भविष्यवाणी करता है।" इसलिए उनसे कहना, 'प्रभु यहोवा यों कहता है: मेरे किसी भी वचन को अब और टाला नहीं जाएगा, पर जो वचन मैं बोल चुका हूँ, वही किया जाएगा,' यह प्रभु यहोवा की वाणी है। यहैजकेल 12:21-28.

उस इतिहास में, जहाँ भविष्यवाणी के चक्र अन्य भविष्यवाणी के चक्रों के भीतर घूम रहे हैं, उन सब में एक ऐसा चक्र है जिसके विषय में प्रेरणा ने अंतिम दिनों की भविष्यवाणियों के विद्यार्थियों को बताया है कि उसी चक्र द्वारा उनकी अनन्त नियति का निर्णय होगा। पंक्ति पर पंक्ति, वही चक्र वह दर्शन भी होना चाहिए जो दानियेल ने देखा था जिसने

उसे मसीह के स्वरूप में रूपांतरित कर दिया, क्योंकि वही दर्शन यह बताता है कि अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा पर क्या घटेगा।

“प्रभु ने मुझे स्पष्ट रूप से दिखाया है कि पशु की मूर्त अनुग्रह-अवधि के समाप्त होने से पहले स्थापित की जाएगी; क्योंकि यह परमेश्वर की प्रजा के लिए वह महान परीक्षा होगी, जिसके द्वारा उनकी अनन्त नियति का निर्णय किया जाएगा। आपकी स्थिति ऐसी असंगतियों का घालमेल है कि बहुत ही थोड़े लोग धोखा खाएँगे।”

“प्रकाशितवाक्य 13 में यह विषय स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है; [प्रकाशितवाक्य 13:11-17, उद्धृत]।

“यह वह परीक्षा है जिसे परमेश्वर की प्रजा को मुहर लगाए जाने से पहले अवश्य सहना होगा। जिन्होंने उसकी व्यवस्था का पालन करके और मिथ्या सब्त को स्वीकार करने से इन्कार करके परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा सिद्ध की है, वे प्रभु परमेश्वर यहोवा के ध्वज के अधीन पंक्तिबद्ध होंगे, और जीवित परमेश्वर की मुहर प्राप्त करेंगे। जो लोग स्वर्गीय मूल के सत्य को छोड़ देंगे और रविवार के सब्त को स्वीकार करेंगे, वे पशु की छाप प्राप्त करेंगे।”  
Manuscript Releases, volume 15, 15.

जो परीक्षा पशु की मूर्ति की परीक्षा के रूप में पहचानी जाती है, वह द्विविध है। वह वह परीक्षा है जो भविष्यवाणी के विद्यार्थी से यह अपेक्षा करती है कि वह रविवार के विधान से पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका में पशु की मूर्ति के विकास को पहचाने, जो कलीसिया और राज्य का संयोजन है। यह वह परीक्षा भी है जो दानिय्येल द्वारा निरूपित लोगों में, अथवा उन लोगों में जो भाग गए, या तो पशु की मूर्ति उत्पन्न करती है या मसीह की छवि। यह पृथक्करण इस बात पर आधारित है कि क्या वे कुँवारियाँ दानिय्येल के समान “इस बड़े दर्शन को देखती” हैं, या वे उस दर्शन से भाग जाती हैं। उस बड़े दर्शन को देखने की कुंजी “गढ़” शब्द द्वारा निरूपित की गई है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

यूहन्ना को निर्देश देने वाला वह बलवान स्वर्गदूत कोई और नहीं, बल्कि स्वयं यीशु मसीह थे। समुद्र पर अपना दाहिना पैर और सूखी भूमि पर अपना बायाँ पैर रखना यह दर्शाता है कि शैतान के साथ महान संघर्ष के समापन दृश्यों में वह कौन-सी भूमिका निभा रहे हैं। यह स्थिति संपूर्ण पृथ्वी पर उनके सर्वोच्च सामर्थ्य और अधिकार का द्योतक है। यह संघर्ष युग दर युग अधिक प्रबल और अधिक दृढ़ होता गया था, और ऐसा ही होता रहेगा, उन समापन दृश्यों तक जब अंधकार की शक्तियों की कुशल चालें अपनी चरमसीमा पर पहुँच जाएँगी। शैतान, दुष्ट मनुष्यों के साथ मिलकर, समूचे संसार और उन कलीसियाओं को धोखा देगा जो सत्य का प्रेम स्वीकार नहीं करतीं। परन्तु वह बलवान स्वर्गदूत ध्यान की माँग करता है। वह ऊँचे स्वर में पुकारता है। वह अपनी वाणी की सामर्थ्य और अधिकार उन लोगों को दिखाने वाला है जिन्होंने सत्य का विरोध करने के लिए शैतान के साथ हाथ मिला लिया है।

इन सात गर्जनों के अपनी वाणी उच्चारित करने के बाद, लघु पुस्तक के विषय में दानिय्येल की भाँति यूहन्ना को यह आज्ञा मिलती है: 'जो बातें उन सात गर्जनों ने कही हैं, उन्हें मुहरबंद कर दे।' ये भावी घटनाओं से संबंधित हैं, जो अपने क्रम में प्रकट होंगी। दिनों के अंत में दानिय्येल अपने भाग के लिए खड़ा होगा। यूहन्ना लघु पुस्तक को मुहर खुली हुई देखता है। तब संसार को दिए जाने वाले प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्वर्गदूतों के संदेशों में दानिय्येल की भविष्यवाणियों का उचित स्थान होता है। लघु पुस्तक की मुहर का खुलना समय-संबंधी संदेश था।

दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें एक हैं। एक भविष्यवाणी है, दूसरी प्रकटीकरण है; एक मुहरबंद पुस्तक है, दूसरी खुली हुई पुस्तक है। यूहन्ना ने वे भेद सुने जो गर्जनाओं ने उच्चारित किए, परन्तु उसे उन्हें न लिखने की आज्ञा दी गई।

“यूहन्ना को दिया गया वह विशेष प्रकाश, जो सात गर्जनों में व्यक्त किया गया था, उन घटनाओं का एक रूपरेखात्मक चित्रण था जो प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के संदेशों के अधीन घटित होने वाली थीं।” द सेवेथ-डे एडवेंटिस्ट बाइबल कमेंटरी, खंड 7, 971।